NEHRU MEMORIAL MUSEUM AND LIBRARY
ORAL HISTORY TRANSCRIPT

खान अब्दुल गफ्फार खां

प्राक्कथन

1. प्रतिलेख के साहित्यिक सम्पत्ति अधिकार अब्दुल वली खां ने नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय को दे दिए हैं । इस इन्टरव्यू के शोध में इस्तेमाल करने में आसानी हो इस दृष्टि से यह निर्णय किया गया है कि जो व्यक्ति इस प्रतिलेख में से छोटे उद्धरण प्रकाशित करना चाहते हैं उन्हें अब्दुल वली खां या नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है । वैसे "छोटे उद्धरण" की बिलकुल सही परिभाषा देना असम्भव है, तो भी समझना चाहिए कि प्रकाशित उद्धरण उतना लम्बा हो सकता है जितना कापीराइट कानून के अनुसार सामग्री के "उचित उपयोग" की परिभाषा के अन्तर्गत साधारण रूप से आता है ।

2. नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय के निदेशक की अनुमति के बिना इस प्रतिलेख की किसी भी तरह दूसरी नक़ल न की जाए ।

3. इस प्रतिलेख को दूसरे किसी पुस्तकालय में जमा नहीं किया जा सकता या उस व्यक्ति के सिवाय इसका उपयोग कोई दूसरा व्यक्ति नहीं कर सकता जिसे नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय ने इसे दिया है ।

4. इस प्रतिलेख के बड़े भाग को उद्धृत करने के लिए नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय के निदेशक की अनुमति लेनी जरूरी है ।

5. प्रतिलेख में से उद्धरण का उल्लेख इस तरह से किया जाना चाहिए:

खान अब्दुल गफ्फार खां का इन्टरव्यू
डा० हरि देव शर्मा ने रिकार्ड किया, तिथि, पृष्ठ
नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय
मौखिक इतिहास विभाग
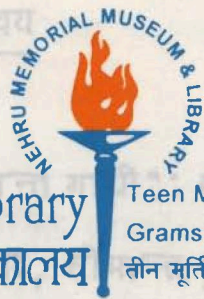
Nehru Memorial Museum & Library
नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय
Teen Murti House, New Delhi - 110 011
Grams : NEHRUMUSUM • Phone : 3015026
तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली - 110 011

ORAL HISTORY DIVISION

Declaration

I agree that the material recorded by my father the late Khan Abdul Ghaffar Khan for the Oral History Project of the Nehru Memorial Museum and Library may be used for historical research or dissemination of historical information in such ways as may be determined by the Nehru Memorial Museum and Library, including publication and broadcast either by them direct or by the research scholars making use of the material.

This transcript may be read in such places as is made available for purposes of research by the Nehru Memorial Museum and Library. Quotations from or citations of this transcript may be made only with written permission of the Director, Nehru Memorial Museum and Library.

No reproduction of this transcript either in whole or any part may be made by any device, except by the Nehru Memorial Museum and Library.

Sd/-

SIGN Abdul Wali Khan

DATE 4th June 1992

जीवन परिचय

खान अब्दुल गफ्फार खां, "सीमान्त गांधी": जन्म, 1890, गांव उत्तमंजई, तहसील चारसद्दा, जिला पेशावर, सीमान्त प्रान्त; शिक्षा, उत्तमंजई तथा पेशावर; संस्थापक, उत्तमंजई में विद्यालय, 1910, दार-उल-उलम, 1911, तथा अंजुमन-इस्लाह-उल अफगानिया, 1921; उत्तमंजई में रोलट बिलों के विरुद्ध भाषण देने में गिरफ्तार, 6 अप्रैल 1919, तथा छ: महीने की जेल; अध्यक्ष, पेशावर खिलाफत कमेटी, 1921; असहयोग आन्दोलन में भाग तथा जेल, 1921-24; संस्थापक, पुख्तून, पुश्तो मासिक, 1928; संस्थापक, खुदाई खिदमतगार, "लाल कुर्ती", 1929; लाहौर कांग्रेस में भाग, 1929; सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग तथा जेल, 1930-31, 1931-34 तथा प्रान्त से निष्कासित; सदस्य, कार्यकारिणी कमेटी, आल इंडिया विलेज इन्डस्ट्रीज़ एसोसिएशन, 1934, तथा कांग्रेस वर्किंग कमेटी, 1934 से अनेक वर्षों तक; बम्बई में राजद्रोही भाषण देने के अपराध में जेल, 1934-36, तथा रिहाई के बाद प्रान्त से निष्कासित; भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग तथा जेल, 1942-45; भारत विभाजन के कड़े विरोधी; सदस्य, पाकिस्तान संविधान सभा, 1947; पाकिस्तान में आजाद पख्तून राज्य की मांग को लेकर संघर्ष तथा 1948 से कई बार जेल गए, प्रान्त से निष्कासित हुए तथा "हाउस अरेस्ट" रहे; सदस्य, पाकिस्तान नेशनल पार्टी, 1957; नेशनल आवामी पार्टी के संस्थापकों में एक, 1957; सम्मानित, नेहरू अवार्ड, 1967, तथा भारत रत्न, 1987; मृत्यु, 29 जनवरी 1988 ।

प्रतिलेख के मुख्य विषय

जवाहरलाल नेहरू तथा लाहौर कांग्रेस 1929; गांधीजी से सम्बन्ध; सीमान्त प्रान्त का दौरा; मतसंग्रह और सरदार पटेल तथा एम॰ए॰ जिन्ना; प्रारम्भिक जीवन तथा परिवार।

नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

मौखिक इतिहास इन्टरव्यू

खान अब्दुल गफ्फार खां

काबुल (अफगानिस्तान) 10.7.1968

डा0 हरि देव शर्मा द्वारा

.....

डा0 हरि देव शर्माः खान साहब, आप जवाहरलाल नेहरू से पहली बार कब मिले। आपके दिल में उनकी जो तस्वीर थी, उनसे मिलने के बाद क्या वह आपको वैसे ही लगी या उसमें आपको कुछ फर्क नजर आया ?

खान अब्दुल गफ्फार खांः मैं पहली दफा जवाहरलालजी से मद्रास कांग्रेस, 1927, में मिला । वह उन दिनों यूरोप से वापस आये थे । चूंकि वह डा0 खान साहब के साथ लन्दन में रह चुके थे और उनके दोस्त भी थे इस वजह से वह मेरे साथ मुहब्बत से पेश आये और सब्जेक्टस कमेटी की मीटिंग में मुझे अपने साथ ले गये । उन्होने यूरोप में जो कुछ देखा और सुना था वह सब उन्होने सब्जेक्टस कमेटी के सामने बयान किया। मुझे याद नहीं लेकिन उस वक्त कोई ऐसी बात थी जिसके मुतअल्लिक मैं भी कुछ कहना चाहता था। पर मैं चूंकि आल इंडिया कांग्रेस कमेटी का मेम्बर नहीं था इसलिए बोल नहीं सका। मैंने जवाहरलाल के मुतअल्लिक जैसे सुना था उन्हें वैसा ही पाया । मैंने देखा कि उनके दिल में कौम और मुल्क की मुहब्बत और आजादी का जज्बा भरा हुआ था ।

मैंने दूसरी दफा जवाहरलालजी को लखनऊ में वर्किंग कमेटी के जलसे में देखा । उस वक्त अंग्रेजों ने अमानुल्लाह खान के खिलाफ साजिश करके अफगानिस्तान में खिलाफत बरपा की थी । मैं उनको अफगानिस्तान की इन्कलाब की हकीकत से खबरदार करने और अखलाकी इमदाद और हमदर्दी हासिल करना चाहता था। वर्किंग कमेटी का जलसा खतम होने के बाद वह मुझे अपने साथ चौधरी खलीकुज्जमा के घर ले गये । वहां हमने उनके साथ खाना खाया और फिर मैं लौटा ।

सन् 1929 में जब हम लाहौर कांग्रेस में गए तो वहां भी मैंने उनको देखा । उस जलसे में हम लोगों पर ज्यादा असर "लेडी वर्कर्स" का हुआ जब हमने देखा कि वे अपने मुल्क और कौम की खिदमत में कमरबस्ता हैं और जोश-खरोश से काम कर रही हैं ।

लाहौर कांग्रेस से वापस आकर हमने जनवरी 1930 में खुदाई खिदमतगार की तहरीक चलाई और अपने सूबे का दौरा किया । वह एक "सोशल" तहरीक थी लेकिन जब वह मुल्क में बहुत हरदिलअजीज हो गयी और लोग इसमें कसरत से शामिल होने लगे तो अंग्रेजों के दिलों में फिक्र और डर पैदा हुआ । उन्होने सिर्फ चार माह ही इंतजार किया और जब देखा कि यह तहरीक बहुत तेजी से मुल्क में फैल रही है तो उन्होने सख्ती शुरू की । हमें गिरफ्तार करके गुजरात {पंजाब} जेल भेज दिया और मुल्क में हमारी तहरीक जुल्म और तशद्दुद से कुचलने की कोशिश की । उस वक्त हमारे दो कारकून गुजरात जेल में हमसे मिलने आये और पूछा कि हम क्या करें । हमने उनको कहा कि अगर वे {मुस्लिम लीग} हमारी कुछ मदद करें, लेकिन वे हमारी मदद पर आमादा नहीं हुए । फिर ये लोग कांग्रेस के पास गए । उन्होने कहा कि अगर तुम लोग हमारे साथ मिलते हो तो हम तुम्हारी मदद करने के लिए तैयार हैं । इस तरह हम कांग्रेस से मिल गये ।

हम लोग गांधीजी और लॉर्ड ईर्विन समझौते के बाद जेलों से बाहर आए । फिर हम कराची कांग्रेस में शरीक होने गये । सैकड़ों खुदाई खिदमतगार लाल वर्दी पहने हुए ढोल-बाजों के साथ उसमें शरीक हुए । हमारे कैम्प में जवाहरलालजी भी आते-जाते थे । खुदाई खिदमतगार से उनकी बहुत मुहब्बत थी और उनसे वह बहुत मुतअस्सिर भी हुए । उसके बाद हमारा आने-जाने का सिलसिला शुरू हुआ । कांग्रेस में खुदाई खिदमतगार की ड्यूटी भी लगाई गयी जोकि उन्होने निहायत खुशउस्लूबी से सरंजाम दी। इन सब बातों का कांग्रेस वालों पर बड़ा असर हुआ । मैं भी कांग्रेस वर्किंग कमेटी का मेम्बर मुंतखब हुआ । जब डा0 एम•ए• अंसारी साहब के घर पर वर्किंग कमेटी की मीटिंग थी तो मैं भी उसमें शरीक था । मीटिंग खतम होने के बाद जब हम बाहर आये तो जवाहरलालजी मेरे साथ बातचीत करने लगे । उन्होने मुझे कहा कि हम पेशावर की कांग्रेस कमेटी को पांच सौ रूपये माहवार बतौर इमदाद देते हैं, लेकिन आप लोगों की आर्गनाइजेशन बहुत बढ़ गयी है इसलिए इसको ज्यादा माली इमदाद की जरूरत होगी । मैंने कहा कि हमें इमदाद की जरूरत नहीं है । यह मुल्क आपका भी है और हमारा भी है । आप इस मुल्क की खिदमत करते हैं और हम भी करते हैं, तो फिर हम आपसे पैसा क्यों लें । बाद में डा0 अंसारी साहब से मालूम हुआ कि जवाहरलाल मुझसे खफा हो

गये हैं । डा0 साहब ने मुझसे पूछा कि तुमने पंडितजी को क्या कहा है, वह कहते हैं कि खान बादशाह बहुत मगरूर हैं । मैंने डा0 साहब को कहा कि मैंने तो सिर्फ इतनी बात कही थी कि हमें पैसे की इमदाद नहीं चाहिए । यह मुल्क आपका भी है और हमारा भी है । उसकी खिदमत करना आपका भी फर्ज है और हमारा भी है, तो हम आपसे पैसा क्यों लें । क्योंकि मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती इसलिए मैंने उनको ऐसा कह दिया। हकीकत यह थी कि पंडितजी मेरी तबियत से वाकिफ नहीं थे और जब वाकिफ हो गये और मुझे समझ गये तब उनके साथ मेरे ताअल्लुकात और गहरे हो गये और मुहब्बत और दोस्ती बढ़ गयी ।

मैं जब कभी जवाहरलालजी के घर में मेहमान होता था तो वह मेरे साथ बहुत मुहब्बत से पेश आते थे, शौक से खाना खिलाते थे और मेरा पूरा ध्यान रखते थे । मुझे भी उनके घर में और अपने घर में कोई फर्क नजर नहीं आता था । तक्सीम के बाद जब हम लोग कैद हो गए तब एक बार जवाहरलालजी लंदन में मेरे लड़के से मिले और हमारी कैदबन्दी की दास्तान सुनकर रो दिये । हमारी ये सब मुसीबतें कांग्रेस के बंटवारे और झूठे रेफरेन्डम को मंजूर करने का नतीजा थीं । हमारी तवक्को थी कि जवाहरलालजी, डा0 राजेन्द्र प्रसादजी और सरदार वल्लभभाई पटेलजी, जो हमारे जिन्दगी भर के रफीक थे हमें मुसीबतों में नहीं छोड़ेंगे । अफसोस हमारी वे उम्मीदें पूरी नहीं हुईं। लेकिन मैं हिन्दुस्तान के लोगों से कभी नाउम्मीद नहीं होऊंगा ।

शर्मा : गांधीजी और पंडितजी की तबियतों में बहुत फर्क था । क्या आप बतायेंगे कि उनकी मुहब्बत का क्या राज था ?

खां साहब: गो गांधीजी और जवाहरलालजी की तबियतों में और ख्यालात में फर्क था लेकिन उन दोनों में इतनी मुहब्बत थी कि वे एक दूसरे से जुदा नहीं हो सकते थे । मुहब्बत ऐसी चीज है जो एक दूसरे को बांध लेती है । उनमें दूसरी चीज खुदा की मख्लूक खिदमत और आजादी का जज्बा था ।

शर्मा : क्या आपके ख्यालात में जवाहरलाल नेहरू की तहरीरों ने हिन्दुस्तान के लोगों को मुतअस्सिर करने में कोई फैसलाकुन काम किया है ? आपने उनकी अज़ीम किताबों का मुतालआ किया होगा । आपको उनकी सबसे अच्छी कौन सी किताब लगी और

क्यों ?

खां साहबः मैंने पंडितजी की उर्दू की सवानिहे उम्र पढ़ी है और मुझ पर उसका काफी असर हुआ । उसका हिन्दुस्तान क्या बल्कि बाहर के जिन लोगों ने उनकी किताबें पढ़ीं हैं उनसे मालूम हुआ कि उन पर भी उस किताब का काफी असर हुआ ।

शर्मा : खां साहब, पंडितजी बंटवारे से कुछ महीने पहले तक्सीम के बहुत सख्त खिलाफ थे लेकिन बाद में उन्होने तक्सीम को माना, तो इसके क्या सबब थे इस पर कुछ रोशनी डालेंगे ?

खां साहबः हकीकत यह है कि एक तो पंडितजी पर लॉर्ड और लेडी माउंटबेटन का काफी असर था, लेकिन सबसे ज्यादा इन लोगों (कांग्रेस नेताओं) को इक्तिदार का शौक था ।

शर्मा : सन् 1946 में आरजी हुकूमत में नायब सदर की हैसियत से जवाहरलालजी जब शुमाली मगरबी सरहद पर गये थे, उस वक्त आप उनके हमराह थे। क्या आप मुस्लिम लीग और पॉलिटिकल एजेन्ट के करवाये हुए मुजाहरे के मुतअल्लिक कुछ बताएंगे जो बाद में तशद्दुद में बदल गए ?

खां साहब : हकीकत यह है कि मैंने जवाहरलाल को यह तज्वीज पेश की थी कि इन कबायलियों पर मर्कज़ी सरकार का करोड़ों रूपया खर्च होता है । लेकिन वह पैसा कौम पर खर्च नहीं होता । वह पैसा पॉलिटिकल एजेन्ट और उनका (मलिक) खा जाता है । तो मैं चाहता हूँ कि आप एक दफा इस इलाके को देखें और उन लोगों को देखें कि वे कितने गरीब हैं । और मैं यह कहूंगा कि अगर यह पैसा अच्छे तरीके से खर्च किया जा सके तो उनकी गुर्बत कुछ हद तक दूर हो सकती है । मैंने कहा कि अगर उनके बच्चों की पढ़ाई के लिए मदरसे खोल दिए जाएं और ऐसी कोई कॉटिज इंडस्ट्री हो ताकि वे लोग अपने घरों में बैठकर कुछ थोड़ा सा कमा सके, जिससे उनकी रोजी का इंतजाम हो सके तो बहुत अच्छा होगा । वे बड़े अच्छे लोग हैं, अगर आप उनकी थोड़ी भी मदद करेंगे तो उससे एक तो यह होगा कि उनकी मुहब्बत आपके लिए पैदा हो जाएगी, दूसरी बात यह होगी कि वे हमेशा के लिए आपके वफादार रहेंगे । पंडितजी ने मेरी बात मंजूर कर ली और मुझसे वायदा किया कि ठीक है, जब मुझे फुर्सत होगी तो मैं फ्रंटियर जरूर आऊंगा और हम इकट्ठे कबायलों को देखनें जाएंगे ।

जब हुकूमत को हमारे प्रोग्राम का इल्म हुआ तो पहले तो लॉर्ड वेवल ने बड़ी कोशिश की कि जवाहरलाल इस ख्याल को, इस इरादे को छोड़ दें । लेकिन जब वह कामयाब नहीं हो सकें तो फिर उन्होने हमारे गवर्नर सर औलफ कैरो को बुलवाया । वह भी तीन दिन तक दिल्ली में जवाहरलालजी को समझाते रहे, लेकिन वह यही कहते रहे कि इसमें क्या हर्ज है, दूसरा यह कि मैंने तो उनसे वायदा किया है तो मुझे तो अपना वायदा पूरा करना है । जब सर औलफ कैरो वहां से मायूस होकर आये तो उन्होने यहां आकर जवाहरलालजी के बरखिलाफ एक बड़ी साजिश की । उन्होने पॉलिटिकल एजेन्ट को बुलवाकर एक बड़ी साजिश बनाने की तज्वीज पेश की । उसके बाद वहां जैसा मुजाहरा हुआ वह तो कैरो के इशारे से हुआ ।

जब जवाहरलालजी सुबह सरहद में आये और कबायल की तरफ जाने लगे तो कैरो ने उन्हें फिर मना करने की कोशिश की । लेकिन जब वह नहीं माने तो उन्होने कहा कि अच्छा, अगर तुम जाते हो तो डा0 खान साहब को साथ ले जाओ, और मेरा नाम लिया कि उसको साथ न ले जाना । तो जवाहरलालजी ने कहा कि मैं तो उससे वायदा करके आया हूँ, उनको तो वहां ले जाना जरूरी है । फिर मैं, डा0 खान साहब और जवाहरलालजी वजीरिस्तान गये । वहां का रेजिडेंट अंग्रेज था । वह अच्छा आदमी था । वहां एक हिन्दू पॉलिटिकल एजेन्ट भी था और बाकी तमाम अंग्रेज थे । तो वजीरिस्तान में उन्होने हमारे साथ बुरा सलूक नहीं किया, लेकिन वहां पर जो देसी पॉलिटिकल एजेन्टस थे उन्होने किया । वजीरिस्तान में जो जिरगा होती थी, उसका इंतिखाब पॉलिटिकल एजेन्ट करते थे, उनके आदमी करते थे । तो जब जवाहरलालजी खड़े होकर कुछ तकरीर करते थे तो जब पॉलिटिकल एजेन्ट उनको (यानी जिरगा को) इशारा करते थे तो वे खड़े हो जाते थे और कहते थे कि हम हिन्दू राज नहीं चाहते और वे चले जाते थे। लेकिन उसके अलावा वहां जो अंग्रेज पॉलिटिकल एजेन्ट थे, उन्होने ऐसी बड़ी हरकत नहीं की । जब हम लोग वहां गये तो सब कबायल हमारे पास आ गये । वे दुम्बे ले आये और बड़ी दावत की । उन्होने कहा कि आप लोग जो भी कहेंगे हम लोग उसके लिए तैयार हैं । इस वाकिए से आप मालूम कर सकते हैं कि कबायलियों को जो उकसाया गया था, वह पॉलिटिकल एजेन्ट का काम था और वह कैरो का बनाया हुआ तमाशा था, वह अंग्रेजों का तमाशा था ।

जब हम वजीरिस्तान से रूखसत होने लगे तो जवाहरलालजी ने जो रेजीडेंट था और जो तमाम पॉलिटिकल एजेन्टस मौजूद थे उनसे पूछा कि आखिर हिन्दुस्तान का जो इतना पैसा इस मुल्क पर खर्च होता है, तो तुमने उस पैसे से यहां के लोगों के लिए क्या किया ? तो वे जवाहरलालजी को कुछ जवाब नहीं दे सकें । उसी दरमियान मैंने कहा कि इन्होने बहुत कुछ किया । इस पर अंग्रेज खुश हुए । फिर मुझसे जवाहरलालजी ने पूछा कि क्या किया ? मैंने कहा कि जवाहरलालजी, इन्होने पैसे के जरिए पठानों को इतना "डिमोरलाइज" किया है कि अगर तुम पठान को दो पैसे दो कि यह दो पैसे हैं और उसके बदले अगर आप चाहो कि वे मुल्क, कौम और इस्लाम सब बेच डालें तो वे बेचने के लिए तैयार हैं । यह आदतें इन्होने यहां के लोगों में डाल दी हैं । इस तरह "डिमोरलाइज" करना, मैं तो इसको पाप समझता हूँ ।

इसके बाद हम पेशावर आये । फिर दूसरे दिन हम लोग पेशावर से खैबर को देखने जा रहे थे । जब हम तीरखान पहुंचे तो वहां के जो लोग थे, अफ्रादी लोग, और जितने बड़े-बड़े आफिशियल थे उन्होने हमारी इज्जत की और वहां पर "फ्रूट" और चाय वगैरह लाई गई । वहां के जो पॉलिटिकल एजेन्ट थे वह मुसलमान थे, बहुत शरीफ आदमी थे, लेकिन जब नौकरी करनी पड़ती है तो जो मालिक कहे वही करना पड़ता है क्योंकि इंसान मजबूर होता है, उसको करना पड़ता है । वह मेरे साथ बैठे हुए थे । एक नौजवान मलिक अफ्रीदी आया और उसने कहा कि देखो पॉलिटिकल एजेन्ट साहब, यह जवाहरलाल जो हैं यह तो हमारा मेहमान हैं और इनके साथ जो आप सलूक करने वाले हैं वह तो ठीक नहीं हैं, इससे तो हमारे लोगों की बदनामी होगी । उस वक्त वह पॉलिटिकल एजेन्ट मेरी तरफ देखकर कुछ शर्मिंदा हुए । उन्होने कहा कि नहीं, कुछ नहीं करना है । लेकिन जब हम तोरखान से वापस आए और लांदी के करीब पहुंचे तो वहां कुछ शिनवारी लोग बैठे थे । हमारे वहां पहुंचने की खबर जब वहां के तहसीलदार को मिली तो वह दौड़ता हुआ हमारे पास आया । उसने पॉलिटिकल एजेन्ट को बताया कि यहां जो लोग बैठे हैं वे मुजाहरा करना चाहते हैं । इतने में उसने हमें कहा कि आप जाओ और मोटर में बैठ जाओ, यहां कुछ नहीं होगा । उसको शायद इल्म नहीं था ।

जब हम थोड़ा आगे बढ़े तो उन लोगों ने हम पर पत्थर बरसाये।

उस वक्त पॉलिटिकल एजेन्ट हमारे आगे-आगे था, उसने फौरन गाड़ी खड़ी कर ली और जो लोग उनके साथ थे उन्होने फायरिंग की, तो वे यानी मुजाहरा करने वाले लोग भाग गये। गो हमारी मोटर को नुक्सान पहुंचा लेकिन हमें कोई नुक्सान नहीं पहुंचा । हमारे साथ एक अंग्रेज प्रेस वाला था, वह मोटर से उस वक्त कुछ तस्वीरें लेना चाहता था । जब वह उठा तो इन लोगों का एक पत्थर उसे भी लगा, उसे चोट आई और काफी तकलीफ हुई । उसने कहा, यह क्या है ? मैंने कहा कि यह भी एक तमाशा है । देख लो यह तमाशा है । उसके बाद हम पेशावर आ गये । मैंने डा0 साहब को कहा कि यह क्या बात है, ऐसी बातें क्यों हो रही हैं । मैंने उनको कहा कि हमारे साथ पुलिस नहीं होनी चाहिए, आप फौज का इंतजाम करें । अगर आप फौज का इंतजाम नहीं कर सकते तो फिर हम खुदाई खिदमतगार का इंतजाम कर लेंगे । डा0 साहब ने कहा कि ठीक है ।

उसके बाद हम पेशावर से हवाई जहाज में रवाना हुए और रिसालपुर पहुंचे । वहां से हमें मालाकंद एजेन्सी जाना था । रिसालपुर में हमने देखा कि पुलिस है, फौज नहीं । मैं तो बहुत नाराज हुआ और मैंने डा0 साहब को कहा कि तुमने हमसे कहा था और वायदा भी किया था कि तुम फौज का इंतजाम करोगे । बल्कि मैंने यह भी कहा कि मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊगा, लेकिन फिर मैंने जवाहरलाल को देखा और कहा कि देखो, मैं इसको कैसे छोड़ सकता हूँ, इसलिए मजबूरन मुझे इनके साथ जाना पड़ रहा है।

हम लोग मालाकंद अपने वक्त से पहले पहुंच गये थे । हमने वहां किले में खाना खाया। जब हम मालाकंद के पॉलिटिकल एजेन्ट के बंगले में बैठे चाय पी रहे थे तो वहां हमने लोगों की आवाजें सुनीं । हमें मालूम हुआ कि इन लोगों को जो वक्त बताया गया था, हम उससे पहले वहां पहुंच गये थे । उनमें बहुत से खुदाई खिदमतगार के भी लोग थे और वे हमें मिलना चाहते थे । पॉलिटिकल एजेन्ट ने उनको बहुत धमकाया और पकड़ कर हवालात में बन्द कर दिया । कुछ मोटरें भी थीं, वे तोड़ दीं और उनको वहां आने नहीं दिया । वहां जवाहरलालजी ने तकरीर भी की । उस दौरान में एक खुदाई खिदमतगार ने मेरे कान में कहा कि देखो, यह शेख जो है यह बड़ा बदमाश आदमी है और अंग्रेजों का बड़ा खैरख्वाह है । यह खैरख्वाह इसलिए है

क्योंकि यह "करप्ट" है । जो अंग्रेज कहता है वही करता है, और तुम यहां से अगर जाने लगो तो अपना इंतजाम करके जाओ क्योंकि इसने तुम्हारे लोगों को जलील करने के लिए काफी लोग बाहर बैठाए हुए हैं । तो मैंने डा0 साहब को बुलाया । जब मैं उनसे बात करने लगा तो वह पॉलिटिकल एजेन्ट हमारी तरफ देखता रहा । मैंने डा0 साहब को यह बात कही कि देखो, तुमको मैंने पहले भी कहा था कि फौज होनी चाहिए, लेकिन तुमने हमारी बात नहीं मानी । अब खबर मिली है कि हमारे खिलाफ कुछ आदमी दंगा करने के लिए बैठा रखे हैं । इससे तो बड़ी मुसीबत होगी इसलिए यहां से जाने से पेशतर हमें पूरा इंतजाम करना होगा । इतने में वह पॉलिटिकल एजेन्ट आया और डा0 साहब को ले गया और पूछा कि क्या बात है । वह डा0 साहब का बड़ा खुशामदी था और डा0 साहब का उस पर काफी असर भी था । उसने उनको कहा कि क्या मैं पठान नहीं हूँ। आप तो मेरे बाप के बराबर हैं, क्या मैं इतना जलील हूँ कि आपसे धोखा करूंगा, साजिश करूंगा, बेइज्जती करूंगा । उसके बाद डा0 साहब ने कहा चलो । हम चलें । थोड़ी देर के बाद डिप्टी कमिश्नर क्रिट्स जोकि हमारे साथ थे खिसक गये । पुलिस की गार्ड भी अभी तक नहीं पहुंची थी । हमारे आगे-आगे पॉलिटिकल एजेन्ट था । हम एक किले के पास पहुंचे । वहां से बहुत से अंग्रेज मिलिटरी अफसर बाहर निकल आये । हमने मोटर खड़ी कर ली और जवाहरलालजी उतरे, उनसे मिले, इतने में जो पॉलिटिकल एजेन्ट था वह भी खिसक गया और वहां हम अकेले रह गये । जब हम थोड़ा आगे बढ़े तो देखा कि बहुत से लोग खड़े हैं । उन्होने पत्थर लेकर हम लोगों को मारना शुरू किया । मुझे भी एक पत्थर लगा । मैं तो जवाहरलालजी की गोदी में गिर गया । हमारे साथ एक हवलदार बैठा हुआ था, उसके पास एक पिस्तौल थी । डा0 साहब ने उससे पिस्तौल छीन ली और पिस्तौल को हाथ में लेकर उन लोगों को कहा कि हट जाओ । अगर नहीं हटोगे तो गोली चला दूंगा । इस पर वे लोग रास्ते से हट गये और अपनी मोटर को, जो उन्होने रास्ता रोक कर सड़क पर खड़ी की थी, को भी हटा लिया । उसके बाद हम पेशावर की तरफ रवाना हो गये । जब हमने कुछ फासला तय कर लिया तो एक गार्ड हमारे साथ हो लिया । उसके साथ एक अंग्रेज अफसर भी था । क्रिट्स साहब भी अब आगे थे और कहने लगे कि आप लोगों ने हमारा इंतजार नहीं किया, मैं तो कपड़े बदलने गया था । तो आगे बढ़ने से पहले हम लोगों ने वहां बैठकर मशविरा किया । हमने फैंसला किया कि

एक लारी हमारे आगे हो और एक लारी पीछे हो और जब कुछ लोग आगे से मिले तो हम खड़े हो जाएं । जो पुलिस गाड़ी है वह आगे हो । और जब वह देखें कि कुछ लोग रास्ता रोके हुए हैं और रास्ते से हट नहीं रहे हैं तो वे उन पर लाठी चार्ज करें और अगर वे फिर भी मुकाबला करने की कोशिश करें तो दूसरी लारी के लोग उन पर फायरिंग करें । तो इस प्रोग्राम को लेकर हम आगे बढ़े ।

जब हम दरगाई पहुंचे तो हमने देखा कि वहां बहुत से लोग खड़े थे । वहां पुलिस भी थी । पॉलिटिकल एजेन्ट साहब भी खड़े थे, हमारी लारी रुक गई । थोड़ी देर के बाद लोगों ने हमारे ऊपर पत्थर बरसाने शुरू कर दिये । एक बड़ा पत्थर आया, उसको मैंने हाथ से रोक लिया । अगर मैं उसे न रोकता तो वह सीधा जवाहरलालजी के सीने में लग जाता । मैंने उनको तो बचा लिया पर मेरा हाथ टूट गया।

खैर, उन लोगों ने काफी पथराव किया । डा0 साहब पर गंदगी फेंकी और जब उन्होने कुछ कशमकश की तो लोग मुतअस्सिर हो गये । फिर हमने पॉलिटिकल एजेन्ट साहब को देखा, और मैंने डा0 साहब को साफ-साफ कह दिया कि यह सारी गन्दी करतूत पॉलिटिकल एजेन्ट की है जो आपको कह रहा था कि वह एक हरामी नहीं है बल्कि एक अच्छा इंसान है । इसके बाद हम पेशावर चले गये ।

शर्मा : तो पॉलिटिकल एजेन्ट ने आपकी बात का जवाब नहीं दिया ?

खां साहब: क्या जवाब देते, मालाकंद एजेन्सी में हमारे साथ जो सलूक हुआ था वह अफवाह तमाम मुल्क में फैल गई थी । लोगों ने उसे बहुत महसूस किया और लोग गुस्सा भी हो गये । अगले रोज हम पेशावर से सरदरयाब जोकि खुदाई खिदमतगार का मर्कज़ था, वहां जाने वाले थे, वहां एक बहुत बड़ा जलसा होने वाला था जिसमें जवाहरलालजी तकरीर करने वाले थे । हमने सुना कि हुकूमत ने मुकीमउल्लाह को दस लारियां दी हैं । और उसके कुछ कबायली मुरीद थे जिनकी मदद से वह रास्ते में हम पर हमला करना चाहता था ।

जब सुबह हुई तो हमने बन्दोबस्त किया हुआ था । पेशावर से लेकर सरदरयाब तक हमारे खुदाई खिदमतगार अपनी वर्दियां पहने खड़े थे और एक अजीब बात यह थी कि हजारों लोग जोकि खुदाई खिदमतगार नहीं थे वे भी बन्दूकें लिए हुए उन खुदाई खिदमतगारों के पीछे खड़े थे । आप जानते हैं कि हम तो खुदाई खिदमतगार हैं

और हम सब लोग "नॉन वाइलेंट" हैं । तो मुस्लिम लीग वालों का यह ख्याल था कि ये लोग तो "नॉन वाइलेंट" हैं इसलिए उन्होने कुछ साजिश की हुई थी । और अगर हम चाहते तो हम रास्ते में उन पर आसानी से हमला कर सकते थे और उन लोगों को तकलीफ पहुंचा सकते थे क्योंकि उनको (यानी मुस्लिम लीग) क्या खबर थी जो मालाकंद एजेन्सी में हमारे साथ हुआ, लोगों ने इसको महसूस किया और लोगों ने उसको बहुत बुरा मनाया (और हम लोगों ने उसके बाद अपना इन्तजाम भी कर लिया)। तो हजारों लोग जो बन्दूकें लिए हुए खड़े थे, हमने उनको कहा कि बाबा, हम तो तशद्दुद नहीं चाहते, हम तो खुदाई खिदमतगार हैं और हम उम्मीद करते हैं कि आप भी तशद्दुद नहीं करेंगे।

जिस वक्त हम लोग पेशावर से डा० साहब के बंगले से रवाना होने वाले थे उसी रात मैंने डा० साहब को कह दिया था कि आज हम अपना इंतजाम खुद करेंगे । तुम्हारी फौज की, तुम्हारी पुलिस की और तुम्हारे अंग्रेजों की हमें कोई जरूरत नहीं है । जब अंग्रेजों ने देखा कि हमने अपना बन्दोबस्त कर लिया है तो सवेरे बहुत से अंग्रेज आए । उनकी फौज बाहर खड़ी थी, तोपखाना भी था । वह सब कुछ देखकर मुझे बहुत गुस्सा आया और मैं बहुत नाराज हुआ । इतने में डा० साहब मेरे पास आये और कहा कि इन अंग्रेजों को कुछ न कहना । मैंने कहा नहीं, इनको यहां से जाना चाहिए। इनको हमारा पीछा नहीं करना चाहिए, यह आप इनको कह दो । वहां ला हुतल्ला भी खड़े थे, तो मैं निकला । मैंने उनसे कहा कि देखो, आज हमने अपनी हिफाजत का बन्दोबस्त कर लिया है, तुम मेहरबानी करके यहां से चले जाओ, हमको तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है । उसके बाद हम वहां से रवाना हो गये । हमारे इस्तिक्बाल के लिए इतने मर्द और औरतें यानी इतने मखलूक जमा हुए थे कि हमने अपनी उम्र में कभी उतने लोगों को नहीं देखा था ।

सरहद के लोगों को जवाहरलाल से बहुत मुहब्बत थी और वे उनकी बहुत इज्जत करते थे । वह जब कभी सरहद आते थे तो लोग उनको बहुत मुहब्बत और प्रेम से "रिसीव" करते थे । उनके लिए दावतें दिया करते थे और ऐसी दावतों में उनको अच्छे-अच्छे "फ्रूट" और मेवे देते थे । लेकिन जवाहरलालजी फ्रूट भी खाते थे और दाल भी खाया करते थे । एक बार दाल खाते हुए मैंने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा

कि नहीं जवाहरलालजी, यह "फ्रुट"जो खुदा की नियामत हैं इसको आपको खाना चाहिए। फिर मैंने उनको जबरदस्ती "फ्रुट" खिलाया करता था ।

शर्मा : कांग्रेस वर्किंग कमेटी और आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के जलसों में आप जवाहरलाल नेहरू के साथ थे । आपकी 1929, 39, 42, 45 और 1947 के जलसों के बारे में कोई याददाश्तें हो तो बताएं ?

खां साहब: जब मैं वर्किंग कमेटी की बैठकों में शरीक होता था तो मैंने देखा और महसूस किया कि जवाहरलालजी, नरेन्द्रदेवजी और जयप्रकाश नारायणजी ये सब सोशलिज्म की तरफ जाना चाहते थे और सी•राजगोपालाचारी और सरदार पटेल का झुकाव सरमायेदारों की तरफ था । लेकिन जब ताकत हाथ में आई तो सोशलिज्म नहीं आया, सरमायेदारी आई । और सबसे अजीब और खतरनाक बात यह हुई कि अंग्रेजों ने बदकिस्मत हिन्दुस्तानियों को गुलाम रखने के लिए जो मशीन लगाई थी और जिसके पुर्जे अंग्रेजों के हाथ के लगे हुए थे वे ही बरकरार रहे । जब भी हम कांग्रेस या वर्किंग कमेटी की बैठकों में मिला करते थे तो अकसर कौमी तहरीक की ही चर्चा करते थे और पंडितजी की ख्वाहिश थी कि हमारी इमदाद करें । मैं हमेशा उनको कहता था कि अगर आप लोग हमारी मदद करना चाहते हैं तो हमारे मर्कज में लड़कों का एक स्कूल और औरतों के लिए अस्पताल बनवायें, क्योंकि उसका असर यहां के लोगों पर बहुत होगा ।

पंडितजी हमारे साथ अकसर झगड़ा करते थे कि तुमको भी दूसरी वर्किंग कमेटी के मेम्बरों की तरह रेल का खर्चा लेना चाहिए । लेकिन मैं उनको कहता था कि मेरे पास पैसा है इसलिए मैं लेना नहीं चाहता । जब नहीं होगा तो ले लूंगा ।

31 मई 1947 को वर्किंग कमेटी में रस्मी तौर पर देश के बंटवारे और फ्रंटियर में रेफरेन्डम करवाने के फैसले को मंजूरी के लिए पेश किया गया । मैं रस्मी तौर पर इसलिए कहता हूँ क्योंकि इसका फैसला तो पहले से हो चुका था, बावजूद गांधीजी और हमारी मुखालफत के, और न ही हमसे मशविरा लिया गया और न ही हमें बताया गया, इस पर हम क्या बहस करते । मैंने सिर्फ इतना कहा कि 1946 का इलेक्शन पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के "इशू" पर हुआ था और हम बड़ी मेजॉरिटि से जीते थे । उसको अभी एक साल भी नहीं हुआ कि आप रेफरेन्डम करवाना चाहते हैं । इस पर गांधीजी ने हमारी ताईद की । इसी बीच राजाजी भी बोल उठे । उन्होने महात्मा गांधी

को कहा कि अब हालात बहुत बदल चुके हैं, फैसला तो बहुत पहले ही हो चुका था । मैंने उनसे इससे ज्यादा इस मसले पर बहस करना मुनासिब नहीं समझा । सिर्फ इतना गांधीजी को कहा कि आप लोगों ने हमें भेड़ियों के हवाले कर दिया है । तब उन्होने कहा कि आप फिक्र न करें । अगर आप लोगों के साथ बेइंसाफी होगी तो कांग्रेस लड़ेगी। तब मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब ने, जो हमारे पास ही बैठे थे, मुझसे कहा कि अब आपको मुस्लिम लीग में जाना चाहिए । मुझे इस पर सदमा हुआ । मुझे लगा कि इतने सालों के पुराने साथी यह नहीं समझ सके कि हम किन असूलों के लिए लड़े । वे समझते हैं कि हम इक्तिदार के लिए अपने असूलों को कुर्बान कर देंगे । मैंने देखा कि जब कभी पाकिस्तान पर ये लोग गांधीजी से बहस करते थे तो सरदार पटेल साहब बहुत गुस्से से कहा करते थे कि पाकिस्तान में क्या है, वह तो रेत का एक ढेर है । पार्टिशन से पहले और बाद में भी हमें कई बार कहा गया कि अगर आप कांग्रेस को छोड़ दें तो आप जो चाहें आपको मिल सकता है, यह शर्त है ।

सन् 1930 में जब हम गुजरात जेल में थे तो सुपरिंटेंडेंट जेल के जरिए यह प्रोग्राम आया था कि अगर आप लोग कांग्रेस को छोड़ दें, तो मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड रिफोर्म के अन्तर्गत आपको भी रियायतें मिल सकती हैं । और उसके बाद भी इसी तरह से रियासतें मिलती रहेंगी । हमने गुजरात जेल में जो सियासी कैदी, हिन्दू, मुस्लिम और सिख थे उनसे मशविरा किया । उनकी राय थी कि डिप्लोमेसि करके इसको मंजूर करना चाहिए । लेकिन मैंने इससे इत्तिफाक नहीं किया और कांग्रेस को नहीं छोड़ा । इसके बाद भी अंग्रेजों की यह कोशिश जारी रही कि हम कांग्रेस को छोड़ दें ।

एक दफा मेरे पास कायदे-आजम जिन्ना साहब का पैगाम आया था। जिन्ना साहब कहते थे कि मेरे इर्द-गिर्द निकम्मे लोग जमा हो गये हैं । और अगर अब्दुल गफ्फार खां मेरे साथ हो जाएं तो मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ । उसके बाद बंटवारे के वक्त भी उन्होने बहुत कोशिशें कीं लेकिन हमने कांग्रेस को नहीं छोड़ा । पर कांग्रेस ने इक्तिदार की खातिर हमें छोड़ दिया । हालांकि हम लोगों को भी इक्तिदार मिल सकता था लेकिन फिर भी हमने कांग्रेस को नहीं छोड़ा । कांग्रेस के फैसले से हम लोगों पर बहुत बुरा असर हुआ, हम पर मायूसी छा गई । कई लोगों ने काम छोड़ दिया और घर में जा बैठे ।

हमारे रेफरेन्डम में शामिल न होने की वजह यह भी थी कि हम पाकिस्तान के साथ मिलना नहीं चाहते थे और हिन्दुस्तान ने हमें छोड़ ही दिया था इसलिए हमने पख्तूनिस्तान का ऐलान किया और कहा कि अगर रेफरेन्डम होना है तो हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और पख्तूनिस्तान इन तीनों का होना है । चूंकि हमारी यह मांग पूरी नहीं की गई इसलिए हमने इसका बाईकाट किया । जब हम यह फैसला कर चुके तो कांग्रेस की तरफ से यह कहने में आया कि अगर आप रेफरेन्डम में हिस्सा लेने से गुरेज़ करते हैं तो उसके माने होते हैं कि आपको रेफरेन्डम में अपनी जीत के मुतअल्लिक शक है और इसको छिपाने के लिए यह बहाना निकाला, तो मैं यह पूछता हूँ कि झूठे रेफरेन्डम का बाईकाट करना, क्या यह बददियानती है ?

शर्मा : खां साहब, आपने रेफरेन्डम का जो बाईकाट किया उसका क्या नतीजा हुआ ?

खां साहब : बावजूद हमारे बाईकाट के जिन्ना साहब को 50 फीसदी वोट मिले और वे भी कैसे । मुझे कर्नल बशीर ने, जो हरीपुर जिले में मेरे साथ कैद थे, बताया कि वह उन दिनों जिला कोहाट में कम्पनी कमांडर था और उन्होने अपनी कम्पनी से तीन वोट डलवाये । इसके अलावा सबसे खुदाई खिदमतगार के जाली वोट डलवाये ।

शर्मा : खां साहब, आप अपनी जवानी के दिनों में फौज में भर्ती होना चाहते थे लेकिन बाद में आप नहीं हुए, इसकी क्या वजह थी ?

खां साहब : मुझे पढ़ने का बहुत शौक नहीं था । हमारा एक नौकर था जो फौजी सरदारों के पास रह चुका था । वह हमेशा मेरे सामने फौज की तारीफ करता था कि फौज में जो सरदार होते हैं उनकी इतनी इज्जत होती है, वे अंग्रेजों के बराबर होते हैं, यह होता और वह होता है। तो मैंने अपने वालिदैन से मशविरा लेने के बाद एक दरख्वास्त हिन्दुस्तान के कमांडर-इन-चीफ को डायरेक्ट कमिशन के लिए दे दी । और कुछ दिनों के बाद मेरी वह दरख्वास्त मंजूर हो गई । फिर यह फैसला हुआ कि मैं फौज में भरती होऊं । उन्हीं दिनों मेरे चंद दोस्त जो अंग्रेजी रिसाला में थे, कोहट से पेशावर छुट्टी पर आये हुए थे । मैं उनसे खुशामदी करने के लिए गया । हमारे रिसालदार दोस्त हमारे पास खड़े थे इतने में एक लेफ्टिनेंट आया । उस वक्त सरदार साहब सिर से नंगे थे और कुछ बाल भी बनाये हुए थे । तो उसने कहा "वैल डिअर सरदार साहब", तुम

भी अंग्रेज बनना चाहते हो । डर के मारे उस गरीब ने जल्दी से अपने सिर पर पटका रख लिया । इस वाकिए का मुझ पर बहुत असर हुआ । उस नौकर ने तो मुझे बताया था कि हिन्दुस्तानी सरदार और अंग्रेज फौजी अफसर में कुछ फर्क नहीं होता और यह बहुत बड़ी इज्जत की नौकरी है । तो जब मैंने वह वाकिआ देखा तो मैंने फौज में जाने से इंकार कर दिया और मैं फौज में भरती नहीं हुआ ।

शर्मा : खां साहब, आपने कहा कि आपको पढ़ने का ज्यादा शौक नहीं था, तो आपको बचपन में खेलकूद में कैसी दिलचस्पी थी और आपको कौन-कौन से खेल अच्छे लगते थे ?

खां साहब : उन दिनों हमारे मुल्क में किस्म-किस्म के खेल थे और मुझे खेलों में बहुत दिलचस्पी थी । और मैं आपको क्या कहूं, ये तो पुश्तों के खेल हैं आप इनको जानते होंगे या नहीं लेकिन बहुत किस्म के खेल थे और मुझे शौक भी बहुत था । उन खेलों में मेरा मुकाबला भी बहुत कम लोग कर सकते थे । अब तो वे खेल रहे नहीं और कुछ के नाम मैं भूल भी गया हूँ लेकिन जितने याद हैं वे मैं आपको कह दूँ । तित मतित, लंडे मार, अंगरश, सिन्करा, मिसूक, किन्जकर, पत्भटूरी, ऐसे बहुत से खेल थे, और वह जमाना भी बहुत अच्छा था । हम तो आधी-आधी रात तक खेला करते थे, और उस जमाने में अमन भी था । मेरे वालिदैन मुझे खेल से मना नहीं करते थे, लेकिन सिर्फ इतना कहते थे कि बाबा, इतनी देर खेल न खेला करो । इसके अलावा मुझे तैरने का बहुत शौक था । हमारे गांव के पास ही दरिया बहता था और वालिदैन मुझे दरिया में तैरने के लिए मना करते थे । वे कहते थे कि ऐसा न हो कि तुम कहीं डूब जाओ, लेकिन मैं छिपकर अकसर दरिया में चला जाता था । और तीन दफा ऐसे मौके भी आए कि मैं डूबने वाला था लेकिन खुदा ने मुझे बचा लिया ।

मुझे शिकार का भी बहुत शौक था । मैं अपने दोस्त के साथ हमेशा शिकार पर जाता था, लेकिन मेरी बन्दूक से कभी भी कोई फाख्ता या परिन्दा जख्मी नहीं हुआ, निशाना लगा ही नहीं । और जो मेरे दोस्त थे वे बहुत से परिन्दों को बन्दूक से मार देते थे । और जब कभी वे मुझे कहते थे बाबा, चाकू ले कर इस परिन्दे का ज़बह करो तो मैं इंकार कर देता था । मैंने कभी किसी परिन्दे को ज़बह नहीं किया क्योंकि मैं ऐसा काम कर नहीं सकता था । मुझे घुड़सवारी का शौक था । हमारे पास एक घोड़ा

था उसने कई बार मुझे गिराया भी । मेरे मां-बाप बड़े नेक और पर्हेज़गार थे । मुझ पर जो असर हुआ वह उन्हीं की बदौलत हुआ । मैं जब कभी बिना पूछे दरिया में नहाने जाता था या ताश खेलता था तो मां तो नहीं लेकिन बाप मुझे कभी-कभी सजा देते थे।

मैंने आपको बताया कि जब मैंने फौज मेंभरती होने का इरादा छोड़ दिया तो मेरे बड़े भाई डा0 खान साहब ने, जो डाक्टरी के लिए इंगलैंड गये हुए थे, मुझे लिखा कि मैं इंजीनियरिंग करने के लिए इंगलैंड चला आऊं । तो बाप ने मुझे पैसा दिया, पी•एन•ओ• में मेरे लिए जगह भी रिजर्व हो गयी, लेकिन मैं जब भी मां से इजाजत मांगता था तो वह इजाजत नहीं देती थीं । उनको लोगों ने कहा कि तुम्हारा एक लड़का इंगलैंड चला गया है अब दूसरे को मत भेजो । क्योंकि वहां जो आदमी जाता है वह वापस नहीं आता । अगर यह दूसरा लड़का भी चला गया तो तुम मिराक़ हो जाओगी। उसके बाद मैंने बड़ी कोशिश की कि मेरे वालिदए मुझे इजाजत दें लेकिन जब उन्होने इजाजत नहीं दी तो मैं उनकी इजाजत के बगैर यूरोप नहीं गया और उस इरादे को ही छोड़ दिया । मेरा इंजीनियरिंग में जाने का सबब यह था कि मैं मैथमेटिक्स में बहुत तगड़ा था । उसमें मुझे कोई हरा नहीं सकता था ।

शर्मा : खां साहब, आप अपने बहन-भाइयों के बारे में कुछ बताएंगें, आप कितने भाई-बहन थे ?

खां साहब : हम दो भाई और दो बहनें थीं । मैं सबसे छोटा था । जो मेरी छोटी बहन थीं, मेरी उसके साथ बड़ी मुहब्बत थी । हम लोगों में सबसे बड़ी बहन थीं, उसके बाद डा0 साहब थे, उसके बाद मेरी दूसरी बहन थी और फिर मैं । यानी मैं घर में सबसे छोटा था ।

शर्मा : उनके नाम आप बतायेंगे ?

खां साहबः क्या जरूरत है उनके नाम बताऊं ।

शर्मा : आपके वालिद साहब की जिरगा में क्या जगह थी और वह क्या काम करते थे ?

खां साहबः हमारे वालिद साहब खान थे लेकिन वह मजहबी आदमी थे । वह बहुत ज्यादा हुकूमत से तअल्लुकात नहीं रखते थे । वह बहुत पर्हेज़गार आदमी थे और हुकूमत के यहां बहुत कम जाया करते थे । जब कभी जरूरी होता तो वह जरूरतमंद

गरीब लोगों को साथ लेकर हुकूमत के पास जाते थे । वरना उनके तअल्लुकात हुकूमत के साथ बहुत कम थे ।

मेरे वालिद साहब को घोड़े की सवारी का बहुत शौक था । जब वह जवान थे तो जमीन को लेकर उनके बड़े भाई के साथ झगड़ा हो गया था । यहां तक कि कुछ लोगों ने उनको जान से मारने की धमकी भी दी । बाद में जब उनके बड़े भाई मर गये तो सारा इक्तिदार मेरे वालिद के हाथ में आया । मेरे वालिद साहब किसी से बदला नहीं लिया करते थे, बल्कि जिन लोगों ने उनके साथ बुराई की उनके साथ उन्होने नेकी की ।

शर्मा : क्या आप अपनी पहली शादी के बारे में कुछ बतायेंगे ?

खां साहब : उसके बारे में क्या बताऊं, जैसे लोग शादी किया करते हैं उसी तरह मैंने भी की । मेरा ख्याल है कि उस वक्त मेरी उम्र 23 साल की थी । जब मेरी पहली शादी हुई तो मेरे दो बच्चे पैदा हुए । उसके बाद वह फौत हो गई । उसके बाद मैंने दूसरी शादी की, उससे दो बच्चे पैदा हुए और वह भी फौत हो गई । उसके बाद मैं कौमी कामों में लग गया था । बल्कि दूसरी शादी के दौरान ही मैं कैद भी हो गया था। तीन साल जेल में रहा, इसलिए मैंने महसूस किया कि मैं तो हर वक्त जेल में रहता हूँ । अगर मैं तीसरी शादी करूंगा तो वह घर में रहेगी और मैं जेल में होऊंगा तो उसको कितनी तकलीफ होगी, उसको कितनी मुसीबत होगी । इसलिए बेहतर यही है कि शादी नहीं करनी चाहिए इसलिए मैंने उसके बाद कोई शादी नहीं की ।

शर्मा : क्या इसके बाद भी आप पर शादी करने के लिए दबाव डाला गया?

खां साहब: मेरे वालिद ने मुझे बहुत कहा, दोस्तों ने भी कहा और दूसरे लोगों ने भी कहा । बहुत अच्छी-अच्छी जगह से मुझे लड़कियां मिल भी सकती थीं लेकिन मैंने हां नहीं की । मैंने सोचा कि मैं अपने ख्वाहिशात के लिए उस गरीब को क्यों मुसीबत में डालूं । मैं तो कौमी काम करता हूँ । हर वक्त जेलखाना, मुसीबत और तकलीफ का डर बना रहता है तो उसको क्यों मुसीबत में डालूं, इसलिए मैंने शादी नहीं की ।

शर्मा : क्या आप बतायेंगे कि आपके घर में किस की ज्यादा चलती थी, आपकी या आपकी बीबी की ?

खां साहब: दोनों की चलती थी । पहले तो औरतों के साथ खाना बड़ा मायूब होता था । मैंने यह ﴾साथ खाना खाने का﴿ रिवाज अपने घर में और अपनी फैमिली में शुरू किया था । इसके अलावा शादी के भी कई फजूल रस्मो-रिवाज थे, मैंने उनको भी तोड़ा । आपको पता है कि हिन्दुस्तान में और पठानों में भी एक तरह का रिवाज है कि वे औरतों को नीचा समझते हैं । मैंने इस बात का प्रचार किया कि मर्द और औरतों में कोई फर्क नहीं है और अगर है तो वह आख्लाक में है । अगर एक औरत बाआख्लाक है, तो वह अच्छी है उस मर्द से जो बेआख्लाक है ।

शर्मा : आपने किस किस्म के रस्मो-रिवाज तोड़े, खर्च वगैरह के या और कोई ?

खां साहब : ऐसे रस्मो-रिवाज जिन पर अखराजात हुआ करते थे ?

शर्मा : खां साहब, 1919 में मार्च के महीने में सारे हिन्दुस्तान में हड़ताल हुई थी । गांधीजी सरहदी सूबा में नहीं गये थे मगर वहां पर भी वह हड़ताल उतनी ही कामयाब हुई थी जितनी कि और हिस्सों में, इसकी क्या वजह थी । क्या आप इस पर कुछ रोशनी डालेंगे ?

खां साहब : हकीकत यह है कि वहां जो थोड़ा-बहुत काम था वह तो कांग्रेस के लोग करते थे लेकिन वहां के लोग ज्यादातर मुतअस्सिर इसलिए हुए क्योंकि उन पर फ्रंटियर रेग्यूलेशन एक्ट लागू था । यह एक बहुत ही गन्दा और ज़ालिमाना कानून था । इस वजह से हमारे सूबे में ज्यादा एजिटेशन हुआ ।

शर्मा : जब आप कैद हुए तो उस जमाने में किस चीज ने आपको कैद होने के लिए मजबूर किया । इसके अलावा आप खुद भी ज़ाति तौर पर उसकी तरफ कैसे खींचे ?

खां साहब : अगर आप इस्लाम की तारीख को देखें तो आपको पता लगेगा कि मुसलमान की जो हकीकी जिन्दगी है वह तो अदम तशद्दुद की जिन्दगी है, वह चीज हम भूल गये थे । और महात्माजी ने जब आवाज लगाई तो हम उनकी तरफ खींच गए ।

शर्मा : आप खिलाफत की तहरीक में थे और मुसलमान इसको एक मजहबी सवाल समझते थे, आपकी उस वक्त इसके बारे में क्या राय थी ?

खां साहब : मेरी इसके मुतअल्लिक यह राय थी कि यह एक मजहबी मसला नहीं था । जब मैं इसमें शरीक हुआ तो मैं अक्सर मुसलमानों को कहा करता था कि तुम एक ऐसी अजीब कौम हो जिसको कभी अपने मुल्क का ख्याल नहीं आता, इसके लिए कोई जद्दोजहद नहीं करता, कोई खिदमत नहीं करता । आप हमेशा बाहिरूनी किस्सों में लगे रहते हो । तो मैं इस ख्याल से इसमें शरीक हुआ कि अपने लोगों को अन्दरूनी हालात से वाकिफ कराऊं और जो हमारे मुल्क का पैसा बाहर जा रहा है उसके लिए कोशिश करूं कि वह यहां के मुसलमानों की तरक्की पर सर्फ हो । मैं इसलिए भी इसमें शरीक हुआ ताकि हिन्दू और मुसलमान एक-दूसरे के नजदीक आकर मुनज़्जिम हो जाएं और उनमें इत्तिहाद पैदा किए जाएं ।

शर्मा : पठान एक बहुत ताकतवर कौम है मगर आप उनको अदम तशद्दुद की तरफ लाये । तो यह आपने किस तरह से किया, इस पर कुछ रोशनी डालेंगे ?

खां साहब : बात यह है मैं पहले भी अर्ज कर चुका हूँ कि इस्लाम में मुसलमानों की अदम तशद्दुद की जिन्दगी है । अगर आप हमारे रसूल का ताबिद पढ़ें तो कोई नहीं कह सकता कि उसने जहाद तलवार से किया है, ऐसा कोई नहीं कह सकता, लेकिन पठान को तशद्दुद के अलावा दूसरा रास्ता बताया ही नहीं गया । तो जब हम लोग उठे तो हमने लोगों को उनके घरों में जाकर बताया । और जब उनकी समझ में आ गया तो वे उस पर अमल करने लग गये ।

क्विट इंडिया मूवमेंट के दौरान हिन्दुस्तान में बहुत जगहों पर तशद्दुद हुए थे । इस मूवमेंट के बाद गांधीजी रिहा हो गये, और मैं भी रिहा हो गया। मैं बीमार हो गया । मैं अक्सर जेलखाने में बीमार हो जाया करता था । उसके बाद मैं बम्बई गया क्योंकि मुझे अपना ईलाज करवाना था । हम बिड़ला साहब के घर में बैठे हुए थे । वहां महात्माजी से मेरी बात हुई । मैंने महात्माजी से कहा कि मुझे समझ नहीं आता कि यह पठान लोग जो हैं उनके पास तशद्दुद का सारा सामान मौजूद है, और फिर भी उन्होने तशद्दुद नहीं किया । दूसरी तरफ हिन्दुस्तानियों के पास तशद्दुद का सामान भी नहीं है फिर भी वे तशद्दुद करते हैं । कितनी मुद्दत से आप इनको समझाते आ रहे हैं । आपके पास बहुत से वर्कर्स भी हैं । इसके {यानी आपकी तहरीक के} मुकाबले में हमारी तहरीक बहुत थोड़े दिनों से शुरू हुई है और हमारे पास साजो-सामान

यानी असला भी है, तो इसकी क्या वजह है । गांधीजी हंस पड़े । उन्होने कहा देखो, अदम तशद्दुद बुजदिलों का काम नहीं है, यह तो बहादुर का काम है । वे पठान जो थे वे बहादुर थे इसलिए उन्होने तशद्दूद नहीं किया और वे अदम तशद्दुद पर कायम रहे ।

शर्मा : गांधीजी बंटवारे के सख्त खिलाफ थे मगर जब मुल्क तक्सीम हुआ तो ऐसा लगता है कि वह इसको बर्दाश्त कर गये, इसकी क्या वजह थी ?

खां साहब : अगर आप उस वक्त के हालात का पूरा-पूरा जायजा लें तो आपको पता लगेगा कि तमाम मुल्क तशद्दुद से भरा हुआ था और मुल्क में जगह-जगह पर नफरत, खूंरेज़ी, तबाही और बरबादी की चर्चा थी । और सबसे बड़ी बात यह थी कि जो उनके अपने साथी थे उन्होने उनको छोड़ दिया, तो ऐसी हालात में महात्माजी क्या कर सकते थे ?

शर्मा : पाकिस्तान की तहरीक चलाने वालों का यह दावा था कि यह जो तहरीक है यह मुसलमानों के हकूक महफूज करने के लिए है । मगर मुसलमान ऐसे लीडरों के पीछे नहीं थे जोकि मजहबी थे और इस्लाम से उनकी काफी वाकिफीयत थी, बल्कि वे जिन्ना साहब के पीछे चले, इसकी क्या वजह थी ?

खां साहब: बात यह है कि अगर उस वक्त हिन्दुस्तान की तहरीक को देखें तो मालूम होगा कि बगैर सूबा सरहद के बाकी हिन्दुस्तान में जो मुसलमान थे उनमें सियासी शऊर नहीं था । और सियासी शऊर उनमें क्यों नहीं था, पठानों में क्यों था, तो पठानों में इसलिए था क्योंकि उनके सैकड़ों लोगों ने कुर्बानी करके खिदमत की, लोगों को समझाया और कोशिश की कि उनमें सियासी शऊर आये और उनमें सियासी शऊर आ भी गया । लेकिन हिन्दुस्तान में ऐसे लोग नहीं थे जो ऐसी कोशिश करते, या उनको समझाते, उनकी खिदमत करते और इस तरह से उनमें सियासी शऊर पैदा करते । बल्कि उल्टे उन्होने उनमें मजहबी जनून पैदा कर दिया था । मैं आपको क्या कहूं, मैं जब कभी हिन्दुस्तान में जाया करता था तो मुसलमान जनता के बीच में जाकर जब तकरीर करता था तो मैं उनको समझाता था कि देखो भाई, ये लोग जो दावे करते हैं कि हम तुम्हारे लिए पाकिस्तान बना रहे हैं, हम मुसलमानों के लिए बना रहे हैं तो तुम्हें जरा गौरो फिक्र करनी चाहिए । तुम इन लोगों के अमल को देखो,

इनकी जिन्दगी को देखो । इन लोगों ने सारी उम्र खुदगरजी का मादा दिखलाया है । इन्होने जो कुछ किया है वह मुल्क के लिए नहीं किया, अपने लिए किया है । अब यह मजहब के नाम पर आपको धोखा देना चाहते हैं और पाकिस्तान बनाना चाहते हैं । यह पाकिस्तान तुम्हारे लिए नहीं होगा बल्कि सिर्फ उन्हीं के लिए होगा । लेकिन उन दिनों लोगों में एक ऐसा जनून था कि वे चिल्लाया करते थे कि तुम हिन्दू का बच्चा है । लेकिन अब मैं मुसलमानों को कहता हूँ कि मेरी वह बात ठीक थी कि तुम्हारी बात ठीक थी । अब जो पाकिस्तान बना, वह चंद लोगों के लिए बना या सब मुसलमानों के लिए बना ।

शर्मा : कांग्रेस और खुदाई खिदमतगारों को बदनाम करने के लिए अक्सर ऐसा कहा जाता है कि मुस्लिम लीग और अंग्रेज आपस में मिले हुए थे ?

खां साहब : बात यह है कि आप मुझसे ऐसे सवाल करते हैं जैसे कोई मुझसे पूछे कि सूरज है या नहीं, दिन हो सूरज हो, और मुझसे कोई पूछे कि सूरज है या नहीं ? बात यह है कि उस वक्त हमारी (यानी डा० खान साहब की) हुकूमत थी । लेकिन जो वजीर थे, उनके "सर्बोडिनेट," वे हमारी बात सुनने या उस पर अमल करने के लिए तैयार नहीं थे । जो कुछ भी गवर्नर कहता था वही करते थे ।

शर्मा : खान अब्दुल कयूम खान एक वक्त में बड़े नेशनलिस्ट थे । उसके बाद वह कांग्रेस के बहुत नुक्ताचीन हो गये । उनमें बहुत तब्दीली आई, उसकी क्या वजह थी ?

खां साहब : खान अब्दुल क्यूम खान नेशनलिस्ट था ही नहीं लेकिन वह असेम्बली की मेम्बरी के लिए नेशनलिस्ट बन गया था । अगर आप उसकी तारीख को देखो तो पता लगेगा कि वह नेशनलिस्ट था ही नहीं । उसने कौम और मुल्क की कोई खिदमत नहीं की।

जब हुकूमत हमारी थी तो मैं उसका बाबा था और जब हुकूमत मुस्लिम लीग की हो गयी तो जिन्ना साहब बाबा हो गये ।

.....